कक्षा - 6 हिन्दी - (वसंत भाग - 1)

पाठ - 11.

# जो देखकर भी नहीं देखते

- हेलेन केलर

शब्दार्थ -

अचरज - आश्चर्य
आदी - अभ्यास
आनंदित - प्रसन्न
समाँ - समय, वातावरण
मुग्ध - मोहित

कदर - सम्मान
आस - उम्मीद
नियामत - ईश्वर की देन

## प्रश्न - अभ्यास

### निबंध से -

प्र॰1. 'जिन लोगों के पास आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं' — हेलेन केलर को ऐसा क्यों लगता था?

उत्तर — 'जिनलोगों के पास आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं' — हेलेन केलर को ऐसा इसलिए लगता था क्योंकि लोग आँखें होते हुए भी बहुत कम देखते हैं। वे प्रकृति की सुन्दरता को देखकर भी उसका अनुभव नहीं करते हैं, वे तो उसके पीछे भागते हैं जो उनके पास नहीं है।

प्र॰2. 'प्रकृति का जादू' किसे कहा गया है?

उत्तर — प्रकृति में होने वाले निरंतर परिवर्तन को 'प्रकृति का जादू' कहा गया है।

प्र॰3. 'कुछ खास तो नहीं' — हेलेन की मित्र ने यह जवाब किस मौके पर दिया और यह सुनकर हेलेन को आश्चर्य क्यों नहीं हुआ?

उत्तर — 'कुछ खास तो नहीं' — हेलेन की मित्र ने यह जवाब तब दिया जब वह जंगल की सैर करके वापस लौटी थी और यह सुनकर हेलेन को आश्चर्य इसलिए नहीं हुआ क्योंकि वह ऐसे जवाब सुनने की आदी हो चुकी थी।

प्र॰4. हेलेन केलर प्रकृति की किन चीजों को छूकर और सुनकर पहचान लेती थीं? पाठ के आधार पर इसका उत्तर लिखो।

उत्तर — हेलेन केलर प्रकृति की निम्नलिखित चीजों को छूकर और सुनकर पहचान लेती थीं —

(i) भोज-पत्र के पेड़ की चिकनी छाल और चीड़ की खुरदरी छाल,
(ii) वसंत के दौरान टहनियों में नयी कलियाँ,
(iii) फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह,
(iv) चिड़िया के मधुर स्वर तथा अंगुलियों के बीच से झरने के बहते हुए पानी आदि।

प्र.5. 'जबकि इस नियामत से ज़िंदगी को खुशियों के इन्द्र-धनुषी रंगों से हरा-भरा किया जा सकता है।' — तुम्हारी नजर में इसका क्या अर्थ हो सकता है?

उत्तर— 'जबकि इस नियामत से ज़िंदगी को खुशियों के इंद्रधनुषी रंगों से हरा-भरा किया जा सकता है' इस कथन का अर्थ है कि दृष्टि अर्थात् आँखें ईश्वर द्वारा दी गई वह अनमोल भेंट हैं जो हमारी ज़िंदगी में इंद्रधनुषी रंग भर देती हैं। हम अपने चारों ओर फैली प्रकृति में कई तरह की खुशियाँ देख सकते हैं।

## ✡ भाषा की बात -

प्र.1. पाठ में स्पर्श से संबंधित कई शब्द आए हैं। नीचे ऐसे कुछ और शब्द दिए गए हैं। बताओ कि किन चीजों का स्पर्श ऐसा होता है —

| | | | |
|---|---|---|---|
| चिकना | ------ | चिपचिपा | ------ |
| मुलायम | ------ | खुरदरा | ------ |
| सख्त | ------ | भुरभुरा | ------ |

उत्तर – चिकना – फ़र्श  चिपचिपा – गोंद
मुलायम – रुई  खुरदरा – दीवार
सख्त – पत्थर  भुरभुरा – बालू

प्र०2. अगर मुझे इन चीज़ों को छूने भर से इतनी खुशी मिलती है, तो उनकी सुन्दरता देखकर तो मेरा मन मुग्ध ही हो जाएगा।

⇒ ऊपर रेखांकित संज्ञाएँ क्रमशः किसी भाव और किसी की विशेषता के बारे में बता रही हैं। ऐसी संज्ञाएँ भाववाचक कहलाती हैं। गुण और भाव के अलावा भाववाचक संज्ञाओं का संबंध किसी की दशा और किसी कार्य से भी होता है। भाववाचक संज्ञा की पहचान यह है कि इससे जुड़े शब्दों को हम सिर्फ महसूस कर सकते हैं, देख या छू नहीं सकते। आगे लिखी भाववाचक संज्ञाओं को पढ़ो और समझो। इनमें से कुछ शब्द संज्ञा और कुछ क्रिया से बने हैं। उन्हें भी पहचानकर लिखो—

| | | | |
|---|---|---|---|
| मिठास | भूख | शांति | भोलापन |
| बुढ़ापा | घबराहट | बहाव | फुर्ती |
| ताज़गी | क्रोध | मज़दूरी | अहसास |

उत्तर—

| विशेषण | क्रिया | संज्ञा |
|---|---|---|
| मीठा - (मिठास) | घबराना - (घबराहट) | क्रोध - (क्रोधी) |
| भूखा - (भूख) | बहना - (बहाव) | मजदूर - (मजदूरी) |
| शांत - (शांति) | | अहसास |
| भोला - (भोलापन) | | |
| ताजा - (ताज़गी) | | |
| बूढ़ा - (बुढ़ापा) | | |
| फुर्तीला - (फुर्ती) | | |

प्र०3. • मैं अब इस तरह के उत्तरों की आदी हो चुकी हूँ।
• उस बगीचे में आम, अमलतास, सेमल आदि तरह-तरह के पेड़ थे।

ऊपर दिए गए दोनों वाक्यों में रेखांकित शब्द देखने में मिलते-जुलते हैं, पर उनके अर्थ भिन्न हैं। नीचे ऐसे कुछ और शब्द दिए गए हैं। वाक्य बनाकर उनका अर्थ स्पष्ट करें —

| | |
|---|---|
| अवधि - अवधी | और - और |
| में - मैं | दिन - दीन |
| मेल - मैल | सिल - शील |

उत्तर — अवधि - (समय) — परीक्षा की अवधि समाप्त होते ही कॉपी ले ली गई।
अवधी - (एक प्रकार की भाषा) — 'रामचरितमानस' पुस्तक अवधी भाषा में लिखी गई है।
में - (अन्दर) — बच्चे वर्ग में बैठे हैं।
मैं - (हम) — मैं खा चुका हूँ।
मेल - (मिलना) — आपसी मेल - जोल प्यार बढ़ाता है।
मैल - (गंदगी) — तुम्हारे वस्त्र मैले हैं।
ओर - (तरफ, दिशा) — सड़क के दोनों ओर वृक्ष हैं।
और - (दूसरा) — राम और श्याम में गहरी मित्रता है।
दिन - (दिवस) — आज का दिन शुभ है।
दीन - (गरीब) — हमें दीन-दुखियों की सहायता करनी चाहिए।
सिल - (पत्थर) — सीता सिल पर मसाला पीस रही है।
शील - (शांत स्वभाव) — सीता शीलवान स्त्री थीं।